[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 1332 **D** **Your Roll No.....**

Unique Paper Code : 205102

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (बी.ए. ऑनर्स) हिन्दी**

Name of the Paper : प्रश्नपत्र 11 : प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन कविता

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कबीर की काव्य-भाषा की विशेषताओं पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

अमीर खुसरो के काव्य में निहित लोक-दृष्टि पर प्रकाश डालिए।

2. 'विद्यापति प्रेम, सौंदर्य और माधुर्य के कवि हैं' - स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

सूरदास के काव्य में वर्णित शृंगार रस की विवेचना कीजिए।

3. तुलसीदास की काव्य-चेतना का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

'प्रम-पथ की निर्भीकता मीरा के पदों का प्राण-तत्व है' - इस कथन की पुष्टि कीजिए।

P.T.O.

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की (लगभग 300 शब्दों में) संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : (2×7.5=15)

(क) कबीर सुमिरण सार है, और सकल जंजाल
आदि अंति सब सोधिया, दूजो देखौं काल।
जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस, फुनि रसना नहिं राम।
ते नर इस संसार में, उपजि षये बेकाम।

(ख) हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन बच क्रम नंदनंदन सों उर यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस निसि, कान्ह कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी, सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपी, जिनके मन चकरी।

(ग) 'दिपइ' लिलार दुइजि ससि रेखा। उएउ मयंक 'मीन' जग देखा।
देखत नैनन्ह दिस्टि खुटाई। भानु सरग 'जनु उदिनल' आई।
बदन पसेज बुंद 'जस' तारा। चांद नखत लै उएउ अंकारा।
मनु दामिनी कौंधा लौकाई। 'चलें' धाइ 'हौं' परेउं भुलाई।
जोति लिलार भएउ उजियारा। चौंधि परेउ 'फुनि' किछु न संभारा।
देखि लिलार बिमोहेउं 'किछुव' न समुझेउं धाय।
'औटि' करेज लोहु भा पानी ओखद कहु 'किछ' माय।

(घ) कबहुंक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्रीरघुनाथ-कृपालु कृपा तें संत-सुभाव गहौंगो।
जथालाभ संतोष सदा, काहु सों कछु न चहौंगो।
परहित-निरत निरन्तर, मन क्रम बचन नेम निबहौंगो।
पुरूष वचन अति दुसह स्रवनन सुनि तेहि पावक न दहौंगो।
बिगतमान, सम सीतल मन, पर गुन, नहिं दोष कहौंगो।
परिहरि देह-जनित चिन्ता, दुख-सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसीदास प्रभु यहि पथ रहि, अविचल हरि-भक्ति लहौगो।

5. निम्नलिखित पाठांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं **दो** का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) विश्लेषित कीजिए - (2×7.5=15)

(क) काहे को ब्याही विदेस रे,

लखि बाबुल मोरे।

हम तो बाबुल तेरे बागो की कोयल

कुहकत घर-घर जाऊं, लखि बाबुल मोरे।

हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़िया,

चुग्गा चुगत उड़ि जाऊं, लखि बाबुल मोरे।

- प्रस्तुत गीत में वर्णित नारी की वेदना पर विचार कीजिए।

(ख) नंदक नंदन कदंबक तरु-तर

धिरे-धिरे मुरलि बजाव।

समय सकेंत-निकेतन बइसल

बेरि-बेरि बोलि पठाव।

सामरि, तोरा लागि

अनुखन विकल मुरारि।

जमुना क तिर उपवन उदवेगल

फिर-फिर ततहिं निहारी।

- शृंगार रस की दृष्टि से इस पद का विश्लेषण कीजिए।

(ग) सिखवति चलन जसोदा मैया।

अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाई धरनी धरे पैया।

कबहुंक सुंदर बदन बिलोकति, उर आनंद भरि लेति बलैया।

कबहुंक कुल-देवता मनावति, चिरजीबहु मेरौ कुंवर कन्हैया।

कबहुंक बल कौं टेरि बुलावति, इति आंगन खेलौ दोउ भैया।

सूरदास स्वामी की लीला, अति प्रताप बिलसत नंदरैया।

- प्रस्तुत पद में निहित वात्सल्य भाव को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

(घ) म्हारां री गिरधर गोपाल दूसरा णां कूयां।

दूसरा णां कूयां साधां सकल लोक जूयां।

भाया छांड्यां, बन्धा छांड्या सगां सूयां।

साधां ढिग बैठ बैठ, लोक लाज खूयां।

भगत देख्यां राजी होयां, जगत देख्यां रूयां।

अंसुवा जल सींच सींच प्रेम बेल बूयां।

-प्रस्तुत पद में मीरा की प्रेमपरक भक्ति के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।